6 अप्रैल 2010 को 1730 बजे स्कूल ऑफ सोशल सांइसेस, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे एन यू), नई दिल्ली के सभागार में इंडियन एसोसिएशन ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ के उद्‌घाटन के अवसर पर माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

आज यहाँ आकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने दशकों से उच्चतर शिक्षण संस्थानों के बीच एक गौरवपूर्ण स्थान ग्रहण किया है, शैक्षणिक कार्यों तथा राष्ट्रीय बहसों में इसने प्रचुर मात्रा में योगदान किया है जो आज भी जारी है तथा एक विश्वविद्यालय के रूप में इसने जवाहरलाल नेहरू की सोच को सही ठहराया है।

अतीत का थोड़ा स्मरण करते हुए मुझे स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज के पश्चिम एशियाई एवं अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र के साथ कुछ वर्षों पहले अतिथि प्रोफेसर के रूप में अपने संक्षिप्त परंतु फायदेमंद संबंध की याद भी आ रही है।

मैं सच बोलकर अपनी बात शुरू करूंगा। जब प्रोफेसर मट्टू ने पहली बार एक ऐसी संस्था की स्थापना किए जाने के विचार का उल्लेख किया, तो मैंने समकालीन पश्चिम एशिया के संबंध में कार्यरत अथवा उसमें रुचि रखने वाले सभी व्यक्तियों को एक मंच पर लाने के प्रयास के अपने 2005 के अनुभव के संबंध में उन्हें बताया। हालांकि शुरू में इस गतिविधि में बहुत तेजी आई तथा नेकनीयत वाले कुछ व्यक्तियों ने इसमें मदद भी की किंतु, यह प्रयास सफल नहीं हुआ।

मेरा उद्देश्य सचेत करना था, रोकना नहीं। यद्यपि किसी लघु कलाकृति का भी अपना कलात्मक महत्व होता है, तथापि बड़े दायरे से और अधिक गुंजाइश, सम्भवत: और अधिक रचनात्मकता मिल जाती है। मुझे प्रसन्नता है कि वे तथा इस पहल से जुड़े अन्य लोग आगे बढ़े; आज की सभा उनकी सफलता का पर्याप्त साक्ष्य है।

एसोसिएशन ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज की आवश्यकता स्वत: स्पष्ट है; वास्तव में इसका अभाव सवाल खड़े करता है। क्या अभाव का कारण ऐसा मनोवृत्ति-दोष हो सकता है जो हमें परदेसी का ख्याल रखने परंतु परदेस के प्रति उदासीन होने के लिए बाध्य करता है?

चाहे यह कारण हो या जो भी कारण हों, कटु सत्य यह है कि प्रभावी आँकड़ों के बावजूद, हमारे देश में अंतर्राष्ट्रीय मामलों का अध्ययन प्रासंगिक, भावोत्तेजक तथा अपर्याप्त है जो कि प्राय: साक्ष्य के तर्क से संचालित होने की अपेक्षा उसके अनुरूप चलने की प्रवृत्ति से अधिक प्रेरित होता है।

यह स्थिति निश्चित रूप से असंतोषजनक है।

किसी ने एक बार यह कहा था कि मनुष्यों की भांति, राष्ट्रों की भी शैशव अवस्था होती है। वर्तमान भारत के संदर्भ में यह बात अब सही नहीं है। हमें विकसित होने, परिपक्व होने और विश्व समुदाय में अपना स्थान बनाने में छह दशक लग गए। तथ्य अत्यन्त स्पष्ट रूप से यह कहानी बयां कर रहे हैं: हमारी जनसंख्या 1.2 बिलियन है, हमारी अर्थव्यवस्था करोड़ों डालर की है, हमारे भीतर कुछ हद तक आसन्न अथवा समीपवर्ती पड़ोसी देश में अपनी शक्ति प्रदर्शित करने की क्षमता है और हम एक ज्ञान-आधारित समाज बनने की क्षमता से भी सम्पन्न हैं। दोनों, साथ मिलकर सैन्य/आर्थिक शक्ति और राजनीतिक शक्ति दोनों से परिपूर्ण होने तथा इन दोनों में प्रचुर मात्रा में वृद्धि करने की क्षमता होने का दावा करते हैं।

क्या यह हमें उस ओर ले जा रहा है जिसे अमरीकियों ने स्मार्ट पावर अर्थात् उपर्युक्त दोनों शक्तियों के घटकों को इस तरह से एक साथ जोड़ने की क्षमता की संज्ञा दी है जो आपस में एक-दूसरे को मजबूत बनाते हों? स्पष्टत: इसका लक्ष्य राष्ट्रीय शक्ति में वृद्धि लाना, वैश्विक निर्णय लेने तथा उन निर्णयों को लागू करने में सक्रिय एवं प्रभावकारी भागीदार बनना है। इसके लिए विश्व के संबंध में, शक्ति संतुलन के संबंध में, वर्तमान अथवा प्रत्याशित बदलावों के गति-विज्ञान के संबंध में तथा भारत एवं भारतीय हितों को प्रभावित करने के इनके तरीकों के संबंध में अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है। इनमें से प्रत्येक तीक्ष्ण विद्वता संबंधी एक कार्यकलाप है जिसमें संकल्पना संबंधी रूपरेखा और सूक्ष्म-विश्लेषण से राष्ट्रीय प्रयास में विश्वसनीयता आएगी।

हम इस उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए कितने तैयार हैं? वैश्विक मंच के दावेदारों के बीच हमारे समकक्ष राष्ट्रों के साथ तुलना में हम कहां तक खरे उतरते हैं?

इस मामले के तीन पहलुओं पर विचार किए जाने की आवश्यकता है। पहला पहलू, वैश्विक स्तर पर एक दावेदार के रूप में हमारे अपने अनुभवों को संकल्पना के रूप में प्रस्तुत किए जाने की आवश्यकता से संबंधित है; दूसरा पहलू हमारे लिए प्रासंगिक देशों और क्षेत्रों के गहन अध्ययन की आवश्यकता तथा ऐसे अध्ययनों के लिए आवश्यक साधन, विशेषकर भाषा कौशल हासिल करने से संबंधित है; तीसरा पहलू उस रीति से संबंधित है जिसके तहत यह अनुभव और ज्ञान हमारे वर्तमान एवं भावी नीतिगत विकल्पों के साथ जुड़ा हुआ है।

अभिलेख से यह पता चल जाएगा कि इनमें से प्रत्येक के संबंध में हमारा कार्य निष्पादन अपर्याप्त है। हमारे बौद्धिक संसाधनों को ध्यान में रखते हुए, गुणवत्ता और विषय वस्तु दोनों ही दृष्टियों से परिणाम बेहतर होने चाहिए थे।

अत: सुधार की आवश्यकता स्पष्ट है। इस परिप्रेक्ष्य में, वह मंच जिसका आज शुभारंभ किया जा रहा है, जहां देश के सभी भागों से आए संबंधित विद्वान और अनुसंधानकर्ता अपने विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान कर सकेंगे, अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होगा। यदि यह एसोसिएशन कमियों की पहचान करके तत्काल सुधारात्मक उपाय कर सकती है और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों में और अधिक उद्देश्यपूर्ण मार्ग प्रशस्त करने की अनिवार्य आवश्यकता के संबंध में जन जागरुकता पैदा कर सकती है तो यह भारतीय विद्वता और भारतीय कूटनीति को संचालित करने के प्रति चिरस्थायी सेवा होगी।

अंतिम किंतु महत्वपूर्ण बात यह है कि अंतर्राष्ट्रीय क्रियाकलाप संबंधी छात्रवृत्ति एक लाभप्रद उद्यम भी होना चाहिए और इसे उन लोगों को जीविकोपार्जन उपलब्ध कराने में सक्षम होना चाहिए जो इसे अपनाते हैं। जवाहलाल नेहरू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ हाल ही में हुई बातचीत में अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों के विभिन्न पहलुओं में विशेषज्ञता प्राप्त कई विद्यार्थियों ने कहा कि वे उपयुक्त एवं लाभप्रद रोजगार के अवसर प्राप्त करने में असफल रहे हैं। नव-स्थापित विश्वविद्यालयों,

विचारकों और अध्ययन के विशिष्ट केन्द्रों तथा भारतीय व्यापार व उद्योग के विश्व में बढ़ते प्रभाव से अंतर्राष्ट्रीय अध्ययनों से जुड़े विद्वानों के नियोजन हेतु नए अवसर मिलने चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन में यथार्थवाद एक अपरिहार्य आवश्यकता है। फिर भी, अच्छी विद्वता में, जो बात हेडली बुल ने कही थी, "हमारी कल्पना की सीमाएं और अतीत के अनुभव से ऊपर उठने की हमारी असमर्थता" एक कारक के रूप में स्वीकार की जानी चाहिए।

मैं कुलपति का धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने इस महत्वपूर्ण अवसर पर मुझे आमंत्रित किया। मैं एसोसिएशन की पूर्ण सफलता की कामना करता हूं और इस महत्वपूर्ण पहल को अंजाम देने के लिए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय को बधाई देता हूं।